



युवा जीवन

सितम्बर 2026

आत्माओं को नरक में जाने से रोकने के लिए आप अपने
हृदय में जो बोझ महसूस करते हैं, वह स्वर्गीय

बुलाहट

मेरे प्रिय युवा साथियों, मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनमोल नाम में आप सभी का स्नेहपूर्ण अभिवादन करता हूँ।

आज संसार में जो कुछ भी हो रहा है, वह ठीक वैसा ही है जैसा यीशु मसीह ने मती 24 में पहले ही बता दिया था।

अगस्त में, नेपाल में ग्लेशियर की हलचल के कारण हुए भूस्खलन में 1,000 से ज्यादा लोगों की जान चली गई। 4,000 से ज्यादा लोग अभी भी लापता हैं, जबकि मलबे के नीचे से अब तक 11,000 लोगों को बचाया जा चुका है। आज भी बचाव कार्य जारी है।

हर दिन, लाखों-करोड़ों लोग, जो यीशु के प्रेम को नहीं जानते, बड़ी संख्या में नष्ट हो रहे हैं। हमें इन आत्माओं की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। एक तरफ, हमें उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए; दूसरी तरफ, हमें उन्हें सुसमाचार सुनाना चाहिए।

इसके लिए, एक ऐसी पीढ़ी को आगे आना होगा—जो पौलुस की तरह कह सके, "मैं स्वर्गीय दर्शन के प्रति आशाकारी रहा" (प्रेरितों के काम 26:19)। हमें नष्ट होते हुए इस जगत के बीच जाकर सुसमाचार की ज्योति जलानी होगी।

इसी तरह, रॉबर्ट कैडवेल ने इंग्लैंड के कॉलेजों में यह आवाज़ उठाई कि भारत में सुसमाचार का प्रचार किया जाना चाहिए क्योंकि लोग नरक की ओर बढ़ रहे थे। कैनन आर्थर मार्गोशिस मेडिकल की पढ़ाई कर रहे थे और अगर वे अपना कोर्स बस छह महीने और पूरा कर लेते तो उन्हें बहुत ज्यादा प्रसिद्धि और धन मिल सकता था। फिर भी, उनका हृदय इस बात की गहरी तड़प और बेचैनी से भरा हुआ था कि वे आत्माओं को बचा नहीं पा रहे थे।

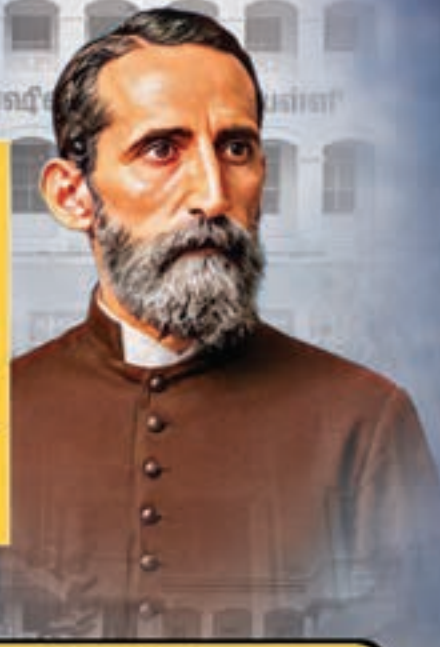
अपनी मेडिकल की पढ़ाई पूरी करने और भारत के लिए निकलने से पहले, आर्थर मार्गोशिस को एहसास हुआ कि लाखों और लोग यीशु के प्रेम को जाने बिना मर जाएंगे। आत्माओं के अनेक मूल्य की तुलना में अपनी मेडिकल शिक्षा को कम महत्व देते हुए, वे भारत के लिए निकल पड़े।

नतीजतन, नाज़रेथ के लोगों को सुसमाचार मिला; स्कूली छात्रों को शिक्षा के उचित अवसर मिले; चिकित्सा सहायता और अस्पताल की इमारत उपलब्ध कराई गई; अनाथ बच्चों की देखभाल के लिए घर बनाए गए; व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान शुरू किए गए; और महिलाओं को अच्छी शिक्षा मिली।

परमेश्वर के बुलाहट के प्रति बस एक व्यक्ति के समर्पण और आशाकारिता ने समाज में ज़बरदस्त बदलाव ला दिया। जब हर कोई सोचता था कि क्या नाज़रेथ से कभी कुछ अच्छा निकल सकता है, तो आर्थर मार्गोशिस ही थे जिन्होंने तमिलनाडु के नाज़रेथ के लिए स्वयं को समर्पित किया और लोगों का बहुत भला किया। आज भी, जिस शहर में आप रहते हैं, वहाँ अनगिनत लोग निराशा की चिल्लाहट के साथ इंतज़ार कर रहे हैं: "मुझे सही रास्ता कौन दिखाएगा? मुझे भलाई की ओर कौन ले जाएगा?"

इसे पढ़ने वाले युवा, जैसे मार्गोशिस—जो दूर देश में पैदा हुए थे—ने स्वयं को परमेश्वर के बुलाहट के लिए समर्पित कर दिया और कहा कि मेडिकल की पढ़ाई से ज्यादा ज़रूरी लोगों की आत्माएँ हैं, वैसे ही आप भी उस स्वर्गीय बुलाहट को मान सकते हैं और वहाँ जा सकते हैं जहाँ परमेश्वर आपको ले जाएँ।

प्रस्तावना



जब आप ऐसा करेंगे, तो यीशु का हृदय आनन्दित हो जाएगा। समाज बदल जाएगा। और जब आप आखिर में स्वर्ग के दरवाज़े पर खड़े होंगे, तो आपकी ज़िंदगी के ज़रिए बचाई गई बहुत सारी आत्माएँ आपके पीछे खड़ी होंगी।

यीशु आपका स्वागत करने के लिए उठेंगे और कहेंगे, "धन्य, हे अच्छे और वफ़ादार सेवक; अपने मालिक के आनन्द में शामिल हो जाओ।"



क्या आप उस दिन वह आवाज़ सुन पाएँ क्योंकि आपने आज उस आवाज़ को सुनने का फैसला किया जो आपके हृदय के भीतर से आ रही है।

परमेश्वर का अनुग्रह आप पर बना रहे!

मसीह के मिशन में
मोहन सी. लाज़रस

एक सुनहरा सपना, एक निडर संघर्ष



आप सभी सफल युवाओं को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

आज हम जिस सफल व्यक्ति से मिलने जा रहे हैं, वह हैं अस्मिता डे, जो त्रिपुरा के दक्षिण त्रिपुरा ज़िले के बेलोनिया इलाके की एक युवा एथलीट हैं। उनके पिता साइकिल रिपेयरिंग का काम करके परिवार का गुज़ारा करते थे। उनके लिए तीन बच्चों की परवरिश करना बिल्कुल भी आसान नहीं था। फिर भी, बहुत कम उम्र से ही अस्मिता को खेलों का बहुत शौक था।



अस्मिता का खेल का सफ़र जूडो से शुरू नहीं हुआ था। शुरुआत में उन्होंने 800 मीटर की दौड़ में हिस्सा लिया। बाद में, जब उन्हें जूडो के बारे में पता चला, तो उन्हें एक नया जुनून मिला और उन्होंने अपना पूरा ध्यान इस खेल पर लगाना शुरू कर दिया। आर्थिक तंगी के बावजूद, अस्मिता ने एथलीट बनने का अपना सपना कभी नहीं छोड़ा। उन्होंने लगातार ट्रेनिंग की, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुकाबले किए और अपनी कौशल को बेहतर बनाती रहीं। 2025 में, उन्होंने कैसाब्लांका अफ्रीकन ओपन में महिलाओं की 48 किग्रा जूडो कैटेगरी में गोल्ड मेडल जीता।

अस्मिता के सफ़र में सबसे बड़ा मोड़ 2026 के ग्लासगो कॉमनवेल्थ गेम्स में आया। महिलाओं की 48 किग्रा जूडो कैटेगरी में खेलते हुए, उन्होंने फ़ाइनल तक का सफ़र तय किया, जहाँ उनका मुकाबला कनाडा की हेड्डी क्राच से हुआ। यह मुकाबला बहुत कड़ा था, और तय समय खत्म होने तक दोनों एथलीट बराबरी पर थीं, इसलिए मैच 'गोल्डन स्कोर' में चला गया। अस्मिता ने निर्णायक पॉइंट

हासिल किया और जीत दर्ज करते हुए गोल्ड मेडल जीता। इस ऐतिहासिक जीत के साथ, वह कॉमनवेल्थ गेम्स में जूडो में भारत के लिए गोल्ड मेडल जीतने वाली पहली भारतीय महिला जूडोका बनीं।

मित्रों, जब आप अस्मिता की कहानी पढ़ें, तो याद रखें कि उनकी सफलता बिल्कुल भी आसान नहीं थी। उन्होंने कभी भी आर्थिक तंगी या ज़िंदगी की चुनौतियों को अपने हौसले को कम करने या अपने सफ़र को रोकने नहीं दिया। वह लड़ती रहीं, कड़ी मेहनत करती रहीं और आखिरकार इतिहास रच दिया।

पिता के गुज़र जाने के बाद भी, अस्मिता ने अपने सपने का पीछा करना और आगे बढ़ना जारी रखा। उनका सफ़र उनकी अंदरूनी ताकत, दृढ़ संकल्प और लगन का एक ज़बरदस्त उदाहरण है। चाहे हमारे आस-पास के हालात कितने भी मुश्किल क्यों न हों या हमारे रास्ते में कितनी भी रुकावटें क्यों न आएँ, आइए हम अस्मिता की ज़िंदगी से प्रेरणा लें और हिम्मत के साथ आगे बढ़ते रहें।

आइए, अपनी चुनौतियों से ऊपर उठें, पूरे संकल्प के साथ अपने सपनों को पूरा करें और अपना इतिहास रचें!



एक उद्देश्य का

अनावरण

एक मसीही परिवार में जन्मी, उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा एक साफ़ उद्देश्य के साथ पूरी की—टीचर बनना, अच्छी कमाई करना और एक सम्मानजनक जीवन जीना। लेकिन सिर्फ 17 साल की उम्र में, उन पर परिवार की ज़िम्मेदारियाँ आ गईं और उन्हें अपनी बीमार माँ की देखभाल करनी पड़ी। इसके बाद क्या हुआ? आइए उन्हीं से सुनते हैं कि कैसे परमेश्वर ने उनका जीवन बदल दिया!

हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में बताइए।

मेरा जन्म दक्षिणी तमिलनाडु के एक मसीही गाँव में मसीही माता-पिता के घर पाँचवीं बेटी के तौर पर हुआ था। मेरे तीन बड़े भाई और एक बड़ी बहन हैं। हमारे गाँव में हर सुबह और शाम प्रार्थना सभाएँ होती थीं। इसलिए, अगर मैं शाम 6 बजे खेल भी रही होती, तो भी सब कुछ छोड़कर शाम की प्रार्थना के लिए चर्च चली जाती थी।

घर, स्कूल और चर्च में, सब मुझे एक “अच्छी लड़की” समझते थे। लेकिन अंदर ही अंदर, मेरे हृदय में ऐसी कई बातें थीं जो यीशु को पसंद नहीं थीं। कई बार, मैं दिखावे का जीवन जी रही थी।

यह बहुत अच्छी बात है... आप एक अच्छे मसीही परिवार में पली-बढ़ीं और नियमित रूप से चर्च जाती थीं। लेकिन क्या सच में यीशु आपके हृदय में थे?

जब मैं चौथी कक्षा में थी, तो मेरे संडे स्कूल टीचर ने एक मिशनरी की कहानी सुनाई। मैं भावुक हो गई और स्वयं को प्रभु को

सौंपते हुए कहा, “यीशु, मैं भी मिशनरी बनने के लिए स्वयं को सौंपती हूँ। मैं अपना जीवन आपकी सेवा में समर्पित करती हूँ।” लेकिन जैसे सोडा की बोतल की गैस जल्दी खत्म हो जाती है, वैसे ही वह संकल्प कुछ ही दिनों में फीका पड़ गया।

मैं 10वीं कक्षा तक अपने गाँव में रही। मेरे पिता के रिटायर होने के बाद, हमारा परिवार चेन्नई चला गया। 11वीं कक्षा में, 63 छात्रों की क्लास में मैं अकेली मसीही थी। फिर भी, उनके लिए एक मिसाल बनने के बजाय, मैं उनमें घुलने-मिलने लगी और दूसरों की तरह ही दिखावा करने लगी।

मैं रोज़ाना फ़िल्मों की कहानियाँ सुनने लगी। उससे पहले, मैंने कभी फ़िल्में नहीं देखी थीं और न ही उनकी कहानियाँ सुनी थीं। जैसे-जैसे मैं 12वीं कक्षा में पहुँची,

मैं अच्छे नंबर लाना चाहती थी, टीचर ट्रेनिंग करना चाहती थी, टीचर बनना चाहती थी और अच्छी सैलरी के साथ सम्मानजनक जीवन जीना चाहती थी। तो मैं प्रभु के सामने घुटने टेककर बैठी और एक वादा



किया: “अब से, मैं फ़िल्मों की कहानियाँ नहीं सुनूँगी। मैं इंस्टीट्यूट में एक प्रार्थना समूह शुरू करूँगी और अपने सहपाठियों को प्रभु की ओर ले जाऊँगी।”

उस संकल्प के साथ, मैंने अपनी पढ़ाई शुरू की।

क्या आप सच में उस वादे पर चलीं? क्या आपने टीचर ट्रेनिंग की?

परीक्षाएँ देने के बाद, जब मैं टीचर ट्रेनिंग में शामिल होने के मौके का इंतज़ार कर रही थी, तो मुझे B.Sc. केमिस्ट्री पढ़ने का मौका मिला और मैं इंटरव्यू की तैयारी कर रही थी। तभी, एक दिन, मेरी माँ अचानक गिर पड़ीं। डॉक्टरों ने बताया कि बहुत ज़्यादा ब्लड प्रेशर और ब्लड शुगर की वजह से, उनके दिमाग तक जाने वाली रक्त वाहिकाओं में खून का थक्का जम गया था, जिससे उनके शरीर के बाईं ओर लकवा मार गया था। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया और उनका इलाज हुआ।

उस समय मैं सिर्फ़ 17 साल की थी। मैं रोती और पूछती, “यीशु, मैं तो अभी बच्ची हूँ। आपने मुझे इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी क्यों दी है?” हर दिन, मैं घुटने टेकती, ज़ोर-ज़ोर से भजन संहिता 150 पढ़ती ताकि मेरी माँ उसे सुन सकें, और प्रार्थना करती। लगभग डेढ़ महीने बाद, हम अपनी माँ को घर ले आए। तब से, परिवार की पूरी ज़िम्मेदारी मुझ पर आ गई। मुझे अपनी माँ को खाना खिलाना पड़ता, थूकने की ज़रूरत पड़ने पर उनके लिए कप पकड़ना पड़ता, रात में कई बार उन्हें बाथरूम ले जाना पड़ता और बाकी सारी चीज़ों का ध्यान रखना पड़ता।

आपकी पढ़ाई वैसी नहीं हुई जैसी आपने उम्मीद की थी, और आप नाराज़ और कड़वाहट से भर गईं। आपने अपनी माँ की देखभाल कैसे जारी रखी?

एक दिन, मेरी माँ का पेट खराब हो गया। मुझे उन्हें, उनके कपड़ों को और जहाँ वह लेटी थीं, उस जगह को तीन बार साफ़ करना पड़ा। मैं परेशान और नाराज़ हो गई। एक बार, मैंने उन्हें थोड़ा ज़ोर से बिठाया, और इससे उन्हें ज़रूर दर्द हुआ होगा। उनकी आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने कहा, “अरे नहीं... मैं अपनी बेटी के लिए बोझ बन गई हूँ।”

उसी पल, मैंने दरवाज़े के पास लगे कैलेंडर पर एक आयत देखी: “तुम जो कुछ भी करो, उसे पूरे मन से करो, जैसे प्रभु



के लिए कर रहे हो, न कि इंसानों के लिए।” (कुलुस्सियों 3:24)

मैं हर दिन कम से कम 50 बार उस दरवाज़े से गुज़रती थी। लेकिन उस दिन, प्रभु ने उस आयत के ज़रिए सीधे मेरे हृदय से बात की: “बेटी एबेन, तुम नाराज़, चिढ़ी हुई और कड़वाहट से भरी हो क्योंकि तुम्हारी माँ उस हालत में है। अब ज़रा सोचो कि वहाँ तुम्हारी माँ की जगह मैं बैठा हूँ।” मैंने तुरंत प्रभु और अपनी माँ, दोनों से माफ़ी माँगी। जब मुझे यीशु के वे पैर याद आए जिनमें कीलें ठुकी थीं और जिन्होंने मेरे लिए क्रूस उठाया था, तो मैंने बिल्कुल अलग भावना के साथ अपनी माँ की सेवा करना शुरू कर दिया। मेरे हृदय में एक अद्भुत आनंद से भर गया।

उस आनंद के साथ, प्रभु ने उनकी सेवा जारी रखने में मेरी मदद की।

आपका गुस्सा और कड़वाहट आनंद में बदल गया। उसके बाद प्रभु के साथ आपके रिस्ते का क्या हुआ?

तब से, मेरे रोज़मर्रा के काम ही मेरी प्रार्थना का समय बन गए। अगर मैं दोपहर 2:00 या 2:30 बजे अपने लिए खाने की थाली लगाती और तभी मेरी माँ मुझे बुलातीं, तो मैं सोचती, “अगर स्वयं यीशु मुझे उस जगह से बुला रहे होते तो मैं क्या करती?” मैं अपना खाना छोड़कर उनकी मदद करने चली जाती।

जब दूध उबलकर बाहर गिरने लगता, तो मैं प्रार्थना करती, “प्रभु, जैसे यह दूध बाहर बह रहा है, वैसे ही मेरा हृदय भी आपके प्रेम से भर जाए।” जब रोटी का आटा बहुत सख्त होता था, तो मैं प्रार्थना करती थी, “मुझे भी तोड़िए। अपने हाथों से दबाइए और आकार दीजिए। मेरे स्वभाव को नरम बनाइए और मुझे अपने जैसा बनाइए।” बर्तन धोते समय मैं



प्रार्थना करती थी, “प्रभु, मेरे हृदय में लगे पाप के दाग धो डालिए।” इस तरह, मेरा रोज़ का काम ही मेरी प्रार्थना का समय बन गया।

यह बहुत बढ़िया है! आपकी गवाही से हमें पता चला कि हमारा रोज़ का काम भी प्रार्थना बन सकता है। लेकिन टीचर बनने के आपके सपने का क्या हुआ?

मेरे भाई मुझसे कहते थे, “तुम हमेशा रोती रहती हो। कहें जाकर पढ़ाई करो।” इसलिए, प्रभु की मदद से मैंने कंप्यूटर, हिंदी, टाइपिंग, शॉर्टहैंड और कॉर्रेस्पोंडेंस के ज़रिए B.A. तमिल की पढ़ाई की। मेरी सारी पढ़ाई एक ही लंबी नोटबुक में लिखी हुई थी। जब भी मैं वह नोटबुक लेकर चलती थी, तो प्रभु से बात करती थी और कहती थी, “मैं बहुत सी चीज़ें पढ़ना चाहती थी। लेकिन आज, मेरा पूरा जीवन बस इसी एक नोटबुक में सिमटकर रह गया है।”

तब प्रभु ने यशयाह 55 के ज़रिए मुझसे बात की: “मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।” मैं टीचर ट्रेनिंग करना चाहती थी, लेकिन अब मैं टाइपिंग सीख रही थी। फिर भी मुझे एहसास हुआ कि प्रभु ने मेरे लिए कुछ बहुत बड़ा सोच रखा था। मैं हर प्रार्थना के दौरान उस आयत को पढ़ती थी और अपने आँसुओं से उस पर निशान लगाती थी। उस वादे ने मुझे दिलासा दिया और हर दिन मेरा मार्गदर्शन किया।

आपको एहसास हुआ कि भले ही आपका सपना पूरा नहीं हुआ, फिर भी परमेश्वर की आपकी जीवन के लिए एक योजना थी। क्या उसके बाद कुछ बदला?

उस दौरान, जब मेरी शादी की तैयारी चल रही थी, मेरे पिता गुज़र गए।

मैं बहुत दुखी और परेशान हो गई थी। मेरी माँ स्वयं से कोई काम नहीं कर सकती थीं, और अब मुझे पिता के बिना जीवन का सामना करना पड़ रहा था। दो-तीन दिन बाद, मैं प्रभु के पास गई और प्रार्थना की: “अब तक, मैं 50% आप पर और 50% अपने पिता पर निर्भर थी। लेकिन आज से, मैं 100% आप पर निर्भर रहूँगी। मैं अपना पूरा भविष्य आपके हाथों में सौंपती हूँ। मैं संपत्ति या पैसे नहीं माँग रही हूँ। मुझे वह व्यक्ति दीजिए जिसके साथ मैं खुशी-खुशी जीवन बिता सकूँ।” मैंने अपना भविष्य पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया। मेरे पिता की मृत्यु के ठीक छह महीने बाद, प्रभु ने मेरी शादी एक ऐसे व्यक्ति से करवाई जो ‘विलेज मिशनरी मूवमेंट’ के ज़रिए मिशनरी के तौर पर सेवा कर रहा था। मैंने प्रभु से कहा, “अब मेरे पिता नहीं हैं जिनसे मैं अपनी ज़रूरतों के बारे में पूछ सकूँ। अब से, मैं हर चीज़ के लिए आपसे ही पूछूँगी।” और प्रभु ने हर चीज़ का ध्यान रखा और मुझे किसी भी चीज़ की कमी नहीं होने दी।

यह बहुत बढ़िया है! आपकी शादी हो गई। क्या आप अपने पति के साथ सेवा-कार्य में शामिल हुईं, या आप शिक्षिका बनीं?

शादी के बाद, मैं भी ‘विलेज मिशनरी मूवमेंट’ से जुड़ गई। जब मैं सेवा-कार्य में आई, तो कुछ गाँवों में बच्चों को लगातार सिखाने और मार्गदर्शन देने के लिए कोई चर्च नहीं थे। इसलिए डेविड गणेशन अन्ना ने मुझसे रोज़ाना के लिए भक्ति-संदेश और प्रार्थना-नोट्स लिखने को कहा, जो बाइबल की सच्चाइयों को सरल और ऐसी कहानियों के ज़रिए समझा सकें जिन्हें बच्चे



समझ सकें। मैंने उनसे कहा, “मैंने ज़्यादा पढ़ाई नहीं की है। मुझे नहीं पता कि यह सब कैसे करते हैं।”

लेकिन प्रभु ने मुझे याद दिलाया: “तुमने जो कंप्यूटर, टाइपिंग, शॉर्टहैंड और तमिल साहित्य की पढ़ाई की थी, वह सब इसी काम की तैयारी थी।” उस दिन से, लगभग 13 सालों तक, प्रभु ने मुझे “मोक्ष पयनम” (स्वर्ग की यात्रा) नाम की एक भक्ति-पुस्तक लिखने में मदद की। मैंने वह किताब उन छोटे-छोटे नोट्स का इस्तेमाल करके लिखी जो मैंने अपनी माँ के साथ रहते हुए लिखे थे। जिसे मैं कभी एक छोटा और मामूली जीवन समझती थी, परमेश्वर ने उसे एक ऐसे सेवा-कार्य में बदल दिया जो हज़ारों युवाओं तक पहुँचता है। आज, हमारी सेवा-कार्य में 37 ऐसे बच्चे हैं जिन्होंने अपने माता-पिता को खो दिया है। वे मुझे “एबेन आंटी!” कहकर बुलाते हैं और दौड़कर मुझे गले लगाते हैं। ऐसे माता-पिता भी हैं जिन्हें उनके बच्चों ने छोड़ दिया है। अगर प्रभु ने उन मुश्किल सालों में मेरी माँ के ज़रिए मुझे तैयार न किया होता, तो आज मैं इन लोगों को प्रेम से गले लगाने और उनकी देखभाल करने में सक्षम नहीं हो पाती।

क्या शादी के बाद भी आपने अपनी माँ की देखभाल की और उन्हें अपने साथ रखा?

अपनी शादी के समय, मैंने प्रभु से कहा, “मैं अपनी माँ को आपके हाथों में सौंपती हूँ।” परमेश्वर ने मुझे एक भाभी दीं, जिन्होंने मेरी माँ की देखभाल मुझसे भी ज़्यादा प्रेम से की। पाँच सालों तक, उन्होंने बहुत प्रेम से मेरी माँ का ध्यान रखा। लगभग आठ साल बाद, मेरी माँ प्रभु के राज्य में चली गईं। उनकी इच्छा के अनुसार, उनकी समाधि के पत्थर पर ये शब्द लिखे गए हैं: “आपने अपनी दासी के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है।”

आप युवाओं से क्या कहना चाहेंगी?

इस दुनिया में हमारे प्रभु जैसा कोई नहीं है। वह कभी भी हमारे संघर्षों को मामूली नहीं समझते।

चाहे हमें किसी भी समस्या का सामना करना पड़े, अगर हम सिर्फ़ उन्हीं पर भरोसा रखें, तो हम हर दिन हैरानी के साथ देख सकते हैं कि वह हमें कैसे राह दिखाते हैं। हमारे मन में ऐसे सवाल हो



सकते हैं: “पढ़ाई का यह रास्ता क्यों?” “ये लोग क्यों?” “यह नौकरी क्यों?” “यह हालात क्यों?” हो सकता है कि हम उस रास्ते को न समझ पाएं जिस पर हम आज चल रहे हैं। लेकिन एक दिन, जब हम पीछे मुड़कर देखेंगे तो हमें एहसास होगा कि प्रभु उन सभी चीज़ों के ज़रिए हमारी भलाई के लिए काम कर रहे थे—और हम उनकी महिमा करेंगे। उनके तरीके हमारे तरीकों से कहीं ऊँचे हैं। अगर हम स्वयं को पूरी तरह से उनके हवाले कर दें और उन पर पूरा भरोसा रखें, तो हम यकीन रख सकते हैं कि वे हमें जिस भी रास्ते पर ले जाएंगे, वह आखिर में हमारे भले के लिए ही होगा।

प्रिय नौजवानों,

जीवन में हमें कई बार ऐसे दर्दनाक अनुभव होते हैं जो उस समय सब कुछ खत्म होने जैसा लग सकते हैं। लेकिन वही पल किसी नई चीज़ की शुरुआत भी बन सकते हैं, जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किया है। जिस परमेश्वर ने सिस्टर एबेन संतोष को दुख के बीच उम्मीद ढूँढना और रोज़मर्रा की ज़िम्मेदारियों के साथ प्रार्थना करना सिखाया, उन्होंने उनकी जीवन को एक ऐसी सेवा में बदल दिया जो आज हज़ारों नौजवानों के जीवन को छू रही है।

हमारे जीवन में किसी दरवाज़े का बंद हो जाना ज़रूरी नहीं कि सब कुछ खत्म होने की निशानी हो। हो सकता है कि यह किसी ऐसी नई चीज़ की शुरुआत हो जिसे परमेश्वर करने वाले हैं!



आपको लज्जित नहीं होना पड़ेगा!!

“तुम्हारे अपमान के बदले तुम्हें दोगुना हिस्सा मिलेगा।” — यशायाह 61:7



जीवन में शर्म, अपमान, असफलता और नुकसान जैसे अनुभव कभी-कभी टल नहीं सकते। लेकिन जो लोग परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, उन्हें वह कभी नहीं छोड़ता। वह उनके सहे हुए अपमान और दर्द को आशीषों में बदल सकता है और उनके नुकसान के बदले उन्हें दोगुना हिस्सा दे सकता है। जब हम समझते हैं कि यह दोगुना हिस्सा किसे मिलता है, तो विश्वास से इस वादे को पाना आसान हो जाता है।

किसे लज्जित नहीं होना पड़ेगा?

1. परमेश्वर की संतान को!

प्रभु कहते हैं, “मेरे लोग कभी लज्जित नहीं होंगे।” — योएल 2:26 हाँ, जो लोग परमेश्वर की संतान हैं, उन्हें कभी भी लज्जित नहीं होना पड़ेगा।

परमेश्वर की संतान कौन हैं?

“परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया, उन्हें उसने परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया।” — यूहन्ना 1:12

क्या आपने अपने पापों से मुँह मोड़ लिया है और यह अनुभव किया है कि परमेश्वर की संतान बनने का क्या मतलब है? अगर हाँ, तो प्रभु आपको लज्जा में नहीं रहने देंगे। और अगर आपने कभी यीशु को अपने हृदय में नहीं अपनाया है, तो वह आज आपसे मिलने के लिए तैयार हैं।

मैं एक युवती को जानता हूँ जिसकी शादी नहीं हो रही थी और उसकी उम्र बढ़ती जा रही थी। जब भी मित्र और रिश्तेदार पूछते, “तुम शादी कब कर रही हो?”, तो उनके सवाल उसके लिए गहरे दर्द और अपमान का कारण बन जाते थे। वह परेशान थी क्योंकि

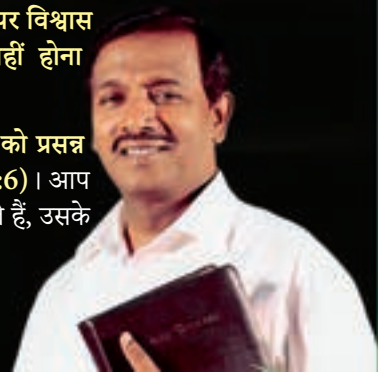
उसे समझ नहीं आता था कि ऐसे सवालों का क्या जवाब दे, जैसे “तीस साल से ज़्यादा उम्र की लड़की से कौन शादी करेगा?” वह मेरे पास प्रार्थना करवाने आई। मैंने उसे दिलासा दिया, उसके लिए प्रार्थना की और उसे घर भेज दिया। कुछ ही दिनों में, प्रभु ने उसके जीवन को इतने अद्भुत तरीके से सँवारना शुरू कर दिया कि उसके रिश्तेदार भी हैरान रह गए और कहने लगे, “उसे इतना बढ़िया लड़का कैसे मिल गया?” उसे लज्जा के बदले दोगुना हिस्सा मिला।

यीशु आपके लिए भी ऐसा ही कर सकते हैं। यदि आप उनकी संतान हैं, तो वह आपको कभी लज्जा में नहीं रहने देंगे। वह आपके काम, पढ़ाई, परिवार और आपके जीवन के हर क्षेत्र में आपको आशीष का दोगुना हिस्सा दे सकते हैं।

2. वे जो विश्वास करते हैं!

बाइबल कहती है, “जो कोई उस पर विश्वास करता है, उसे कभी लज्जित नहीं होना पड़ेगा।” — रोमियों 10:11

और, “बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है” (इब्रानियों 11:6)। आप यीशु से जो भी आशीष पाना चाहते हैं, उसके



लिए आपको विश्वास करना होगा: “यीशु मसीह मेरे लिए यह अच्छा काम करेंगे।” बिना विश्वास के, हम वे आशीषें नहीं पा सकते जो परमेश्वर हमें देना चाहते हैं। वह ऐसे परमेश्वर हैं जो उन लोगों के विश्वास का सम्मान करते हैं जो उन पर भरोसा करते हैं। जो लोग उन पर विश्वास करते हैं, उन्हें कभी शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा। इसलिए, अपना विश्वास न छोड़ें। मज़बूती से खड़े रहें और अडिग रहें!

एक भाई, जिसने यीशु को अपना लिया था, एक बार ऐसे दौर से गुज़रा जब उसके पास अपने परिवार को खाना खिलाने के लिए भी पैसे नहीं थे। फिर भी उसने प्रभु पर अपना विश्वास नहीं छोड़ा। उसने हर ज़रूरत के लिए यीशु पर भरोसा किया और एक के बाद एक चमत्कार देखे। एक दिन, उसके छोटे बेटे को, जो अभी स्कूल में पढ़ता था, स्कूल बैज की ज़रूरत पड़ी। परिवार के पास उसे खरीदने के लिए दो रुपये भी नहीं थे। आँखों में आँसू लिए, पिता ने विश्वास के साथ प्रार्थना की: “हे प्रभु, तूने एलिय्याह को कौवों के ज़रिए खाना खिलाया था। कृपया आज मेरे लिए भी उसी तरह कोई चमत्कार कर!”

प्रार्थना पूरी करने के बाद, एक कौवा उसके पास आया और उसके बगल में कुछ गिरा दिया। जब उसने उसे उठाया, तो पाया कि वह बिल्कुल वही स्कूल बैज था जो उसके बेटे के स्कूल के छात्र पहनते थे! हो सकता है कि यह सिर्फ़ दो रुपये की छोटी सी चीज़ रही हो, लेकिन क्या यह उस पिता के लिए चमत्कार नहीं था जिसने यीशु पर भरोसा किया था?

यीशु मसीह ने उस व्यक्ति के विश्वास का सम्मान किया जिसने उन पर विश्वास किया और उनसे प्रार्थना की। प्रभु ने उस व्यक्ति को लज्जित नहीं होने दिया जिसने उन पर भरोसा किया था। अगर प्रभु इतनी छोटी सी चीज़ पर भी इतना ध्यान देते हैं, तो यह कितना पक्का है कि वे उन चीज़ों में भी चमत्कार कर सकते हैं जिनके लिए आप विश्वास के साथ उनसे प्रार्थना करते हैं!

3. जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं!

प्रभु कहते हैं, “मैं प्रभु हूँ; जो मुझ पर आशा रखते हैं, उन्हें लज्जित नहीं होना पड़ेगा” (यशायाह 49:23)।

कभी-कभी लोग इंसानों पर भरोसा करते हैं और उम्मीद करते हैं कि वे उनकी अपेक्षाएँ पूरी करेंगे—लेकिन आखिर में उन्हें निराशा और लज्जा ही मिलती है।

लेकिन जो लोग परमेश्वर के वचन पर भरोसा करते हैं और धैर्यपूर्वक प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं, उन्हें कभी भी लज्जित नहीं होना पड़ेगा। प्रभु ने अब्राहम को लज्जित नहीं होने दिया। अब्राहम के परमेश्वर हमारे भी परमेश्वर हैं! वे आपके भी परमेश्वर हैं। वे आपको लज्जित नहीं होने देंगे। इसलिए, विश्वास और धैर्य के साथ उनका इंतज़ार करें।

एक बार, जब मैं सेवा के काम से मुंबई में था, तो एक जोड़ा मेरे पास आया और बोला, “हमारी शादी को 22 साल हो गए हैं। कृपया प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमें संतान की आशीष दें।” इतने सालों तक प्रभु पर उनका बना हुआ विश्वास और इस बात ने कि वे परमेश्वर से मुँह मोड़े बिना उनके आशीष का इंतज़ार करते रहे, मुझे बहुत प्रभावित किया। मैंने प्रार्थना की, “हे प्रभु, अपने इन बच्चों को, जिन्होंने आपका इंतज़ार किया है, लज्जित न होने दें।”

और उन्हें घर भेज दिया। एक साल बाद, जब मैं फिर से सेवा के काम से मुंबई में था, तो वे मुझसे मिलने आए—उस बच्चे के साथ जो प्रभु ने उन्हें दिया था!

प्रिय युवा मित्रों, यीशु मसीह कितने अच्छे हैं! उन्होंने उन लोगों को लज्जित नहीं होने दिया जिन्होंने उनका इंतज़ार किया।

प्रभु आज आपसे कहते हैं: “डरो मत; तुम लज्जित नहीं होगे। अपनी लज्जा के बदले, तुम्हें दोगुना आशीष मिलेगी।”

यह वादा आपके लिए है!

विश्वास के साथ इस वादे को थामे रहें और इसे अपना बना लें।

आपकी मौजूदा स्थिति ही आपकी कहानी का आखिरी अध्याय नहीं है। उस पर भरोसा रखें, उसका इंतज़ार करें और कभी हार न मानें। जिस परमेश्वर ने दूसरों के लिए लज्जा को आशीष में बदल दिया, वह आपके लिए भी ऐसा ही कर सकता है।

MOUNT SINAI 2026
One - Day
Fasting Prayer for Youth

November 21 Saturday
Time: 9:00 AM – 4:00 PM

In Mumbai

Message & Prayer:

**Bro. Gruz
Masilamani**

Contact:

90048 82470
80824 10410



दबाव में

हेलो मिलो! सब कैसे हैं? हमारी श्रंखला “दबाव में” (अंडर प्रेशर) के ज़रिए आपसे दोबारा मिलकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

क्या आपने कभी गौर किया है कि बहुत ज़्यादा दबाव में बनी चीज़ें आसानी से टूटती नहीं हैं? बल्कि, वे बहुत कीमती चीज़ बन सकती हैं। इस महीने, क्या आप एक ऐसी खूबसूरत चीज़ की कहानी जानने के लिए तैयार हैं जो बहुत ज़्यादा दबाव में बनती है— एक मोती? आइए, इस श्रंखला को शुरू करते हैं!

मोती उन कीमती खज़ानों में से एक है जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं। दिलचस्प बात यह है कि मोती असल में आवेग से पैदा हुई एक खूबसूरत चीज़ है। रेत का एक मामूली सा कण भी, सीप (ऑयस्टर) के सन्न की वजह से, हज़ारों या लाखों की कीमत वाला रत्न बन सकता है।

चरण 1: बाहरी चीज़ का अंदर आना

समुद्र की गहराई में रहने वाले सीप खाने और सांस लेने के लिए अपने खोल (शेल) खोलते हैं और पानी अंदर खींचते हैं। कभी-कभी, रेत का एक छोटा सा कण, कोई परजीवी (पैरासाइट), खोल का टूटा हुआ टुकड़ा या कोई और बाहरी चीज़ दोनों खोलों के बीच आ जाती है।

सीप उसे आसानी से बाहर नहीं निकाल पाता। वह बाहरी चीज़ सीप के मुलायम शरीर से रगड़ खाती है, जिससे बेचैनी और तकलीफ़ होती है।

चरण 2: सुरक्षा कवच बनाना

इस बेचैनी से स्वयं को बचाने के लिए, सीप के पास एक अद्भुत सुरक्षा तंत्र होता है। सीप के अंदर ‘मेटल’ नाम का एक खास ऊतक (टिशू) होता है। मेटल की कोशिकाएं उस बाहरी चीज़ को पूरी तरह से घेर लेती हैं और उसे एक छोटे से सुरक्षा कवच (पाउच) की तरह बंद कर देती हैं। इससे वह परेशान करने वाली चीज़ सीप के शरीर के सीधे संपर्क में नहीं आ पाती।



चरण 3: नेकर की परत पर परत

जब बाहरी चीज़ बंद हो जाती है, तो मेंटल की कोशिकाएं लगातार उसके ऊपर 'नेकर' नाम का एक चमकदार पदार्थ छोड़ने लगती हैं। नेकर वही पदार्थ है जिसकी वजह से सीप के खोल के अंदर खूबसूरत, मोतियों जैसी चमक होती है। मुख्य रूप से कैल्शियम कार्बोनेट और एक तरह के प्रोटीन से बना नेकर, बहुत पतली परतों में, एक के ऊपर एक जमा होता जाता है। यह प्रक्रिया महीनों तक और कुछ मामलों में 2 से 4 साल तक चल सकती है। जितनी ज़्यादा परतें जमा होती हैं, मोती उतना ही बड़ा और चमकदार बनता जाता है।



चरण 4: मोती का बनना

नेकर की हज़ारों परतें जमा होने के बाद, रेत का वह छोटा सा कण, जिसने कभी आवेग पैदा की थी, एक चिकने, गोल और चमकते हुए मोती में बदल जाता है। जब रोशनी इन परतों पर पड़ती है और वापस लौटती है, तो मोती को अपनी अनोखी चमक, गहराई और सुंदरता मिलती है। दिलचस्प बात यह है कि हर 10,000 जंगली सीपियों में से सिर्फ़ एक में ही मोती होता है। यही वजह है कि मोती इतने दुर्लभ और कीमती होते हैं।



प्रिय मित्रों...

ज़िंदगी में आने वाली मुश्किलों और परेशानियों का सामना अगर हम सब्र और हिम्मत के साथ करें, तो वे भी खूबसूरत अनुभव बन सकती हैं। सीपी के अंदर जाने वाला रेत का हर कण हमें उन मुश्किल हालात की याद दिला सकता है जिन्हें परमेश्वर हमारी ज़िंदगी में आने देते हैं। रेत के उस कण या छोटी सी चुभन के बिना, सीपी के अंदर कभी मोती नहीं बन पाता। ठीक वैसे ही, ज़िंदगी के मुश्किल दौर के बिना, हम शायद कभी परमेश्वर के हाथों में कीमती मोती या ऐसे पाल नहीं बन पाते जो दूसरों के लिए वरदान साबित हों। जैसे सीपी की बाहरी परत उसे चुभने वाली चीज़ से बचाती है और मोती बनने में मदद करती है, वैसे ही पवित्र आत्मा मुश्किलों के समय हमारी रक्षा करता है, हमें हार मानने से बचाता है और हमें कुछ कीमती चीज़ में ढालता है।

हर सीपी मोती नहीं बनाती। मोती उसी सीपी में बनता है जो दबाव और आवेग से गुज़रती है।

इसलिए यह याद रखें: दबाव कोई खतरा नहीं है; यह बदलाव का एक मौका है!

स्वर्गीय बुलाहट

परमेश्वर के बुलाहट को समझना हमेशा आसान नहीं होता। परमेश्वर इस पृथ्वी पर अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए लोगों को चुनते और बुलाते हैं। बुलाहट कोई ऐसी बात नहीं है जिसे हम अपनी इच्छाओं से बनाते हैं; यह वह दर्शन है जिसे प्रभु हमारे हृदयों में रखते हैं।

हालाँकि एलीशा एक समृद्ध परिवार से था, फिर भी वह ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो बस बैठकर समय बर्बाद करते हों। वे एक मेहनती युवा थे। परमेश्वर आलसी लोगों को नहीं बुलाते। जब आप प्रभु द्वारा सौंपी गई ज़िम्मेदारियों को ईमानदारी और मेहनत से निभाते हैं—चाहे वह आपकी पढ़ाई हो, करियर हो या कोई अन्य क्षेत्र—तो वे आपके लिए सही मार्गों को खोल देते हैं।

जब परमेश्वर की बुलाहट एलीशा के पास आई, तो उन्होंने उसे ठुकराया नहीं। उन्होंने उसे अपना लिया। “एलिय्याह उनके पास से गुज़रे और अपनी चादर उन पर डाल दी” (1 राजा 19:19)। आज भी, जब परमेश्वर कई युवाओं को बुलाते हैं, तो वे अपनी परिस्थितियों का बहाना बनाकर उस बुलावे को स्वीकार करने से इनकार कर देते हैं। लेकिन जब एलीशा ने वह बुलावा सुना, तो उन्होंने कोई देरी नहीं की। उन्होंने स्वयं को परमेश्वर को समर्पित कर दिया, अपनी पुरानी ज़िंदगी छोड़ दी और एलिय्याह के पीछे हो लिए। “तब वे उठे, एलिय्याह के पीछे हो लिए और उनकी सेवा करने लगे” (1 राजा 19:21)।

जब एलीशा ने पहली बार परमेश्वर की बुलाहट पर सेवा करना शुरू किया, तो उन्होंने तुरंत कोई बड़े चमत्कार नहीं किए। इसके बजाय, उन्होंने विनम्रतापूर्वक एक ऐसे सेवक के रूप में सेवा की, जो एलिय्याह के हाथों पर पानी डालता था। घर पर उनकी ज़िंदगी चाहे कितनी भी आरामदायक क्यों न रही हो, एक बार जब उन्हें परमेश्वर की बुलाहट मिली, तो उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से उसके प्रति समर्पित कर दिया। उस समर्पण के कारण, प्रभु ने उन्हें एलिय्याह पर मौजूद अभिषेक का दोगुना हिस्सा देकर इस्तेमाल किया। यदि आप अपनी परिस्थितियों को देखना बंद कर दें और उस परमेश्वर को देखना शुरू करें जिसने आपको बुलाया है, तो आप अपनी बुलाहट के प्रति वफ़ादार रहेंगे और प्रभु के लिए महान कार्य करेंगे।

सेवा की बुलाहट एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। जब परमेश्वर ने पूछा, “मैं किसे भेजूँ, और हमारे लिए कौन जाएगा?” तो यशायाह ने पूरे हृदय से जवाब दिया, “मैं यहाँ हूँ! मुझे भेजो।” (यशायाह 6:8) यही सच्ची बुलाहट का सार है—परमेश्वर के प्रति पूरी तरह और स्वेच्छा से समर्पण। अंत-समय की जागृति भारत से उठेगी और कई देशों को हिलाकर रख देगी। इस पुनर्जागृति आंदोलन के हिस्से के रूप में, प्रभु आपके ज़रिए महान और महिमामय काम करने जा रहे हैं।

इसलिए अभी स्वयं को तैयार करें और अपनी बुलाहट को पक़्का करें। परमेश्वर ने आपके जीवन के लिए जो बुलाहट दी है, उसे हल्के में न लें। एलीशा की हार्दिक इच्छा थी कि उसे वह अभिषेक मिले जो एलिय्याह पर था। चाहे कितनी भी मुश्किलें आईं, वह एलिय्याह के पीछे चलता रहा जब तक कि उसे वह अभिषेक नहीं मिल गया। ठीक उसी तरह, चाहे पाप करने के कितने भी प्रलोभन आपके सामने आएँ, अगर आप यीशु से मज़बूती से जुड़े रहते हैं और पूरे हृदय से उनका अनुसरण करते हैं, तो आप मज़बूती से खड़े रहेंगे और अपनी बुलाहट के प्रति वफ़ादार रहेंगे।



प्रिय युवा साथियों,

एलीशा की प्रतिबद्धता और बुलाहट ने उसे परमेश्वर का एक महान सेवक बना दिया। प्रभु ने आपको संसार के तौर-तरीकों का अनुसरण करने के लिए नहीं बुलाया है। उन्होंने आपको अंधेरे में डूबे संसार में रोशनी बनकर चमकने के लिए बुलाया है। अपनी जवानी, प्रतिभा, समय और क्षमताओं का इस्तेमाल परमेश्वर की बुलाहट के लिए करें। एलीशा की तरह, परमेश्वर की बुलाहट को नज़रअंदाज़ न करें। पूरे हृदय से उनकी बुलाहट को अपनाएं। और जब आप ऐसा करेंगे, तो आप प्रभु के लिए तेजोमय रूप से चमकेंगे!

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 29/11/2026 और 31/01/2027 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा। कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।



संपर्क संख्या: +919750955548



Jesus Redeems - Hindi



www.comfortertv.com



इग्नाइटर यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहाँ युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश। आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मज़बूत करो, और दूसरों को मज़बूत करने के लिए तैयार हो जाइये!

हर पहले रविवार

Mumbai – Dharavi

Timing: 5.00 PM- 7.30 PM

World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार

THANE

Timing: 5PM - 7:30PM

R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार

Mumbai-Malad

Timing: 4.00 PM – 6.00 PM

Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)

9664050567 | 9619996976

जिन्होंने माना

और जिन्होंने नहीं माना

परमेश्वर की बुलाहट

जिन्होंने माना

1. अब्राहम

परिस्थिति: वह ऐसे परिवार में रहता था जो सच्चे परमेश्वर को नहीं जानता था।

उद्देश्य: उस जाति का पिता बनना जिसे परमेश्वर ने चुना था।

आज्ञापालन: बिना यह जाने कि वह कहाँ जा रहा है, उसने अपना देश छोड़ दिया और परमेश्वर की आज्ञा मानकर निकल पड़ा।

पढ़ें: उत्पत्ति 12:1-9

2. शमूएल

परिस्थिति: वह एक छोटा लड़का था जो पवित्र तंबू में सो रहा था।

उद्देश्य: परमेश्वर के नबी के तौर पर सेवा करना और इस्राएल के लोगों की अगुवाई करना।

आज्ञापालन: उसने जवाब दिया, "बोलिए, क्योंकि आपका सेवक सुन रहा है।"

पढ़ें: 1 शमूएल 3:1-21; 7:15

3. दाऊद

परिस्थिति: वह सबसे छोटा बेटा था, जिसे परिवार में किसी ने खास अहमियत नहीं दी थी, और वह चरवाहे का काम करता था।

उद्देश्य: परमेश्वर के मन के मुताबिक राजा बनकर इस्राएल पर राज करना।

आज्ञापालन: उसने पवित्र अभिषेक को पाया और राजा शाऊल की वफादारी से सेवा की।

पढ़ें: 1 शमूएल 16:1-13; 2 शमूएल 7:12-16

4. पतरस

परिस्थिति: वह गलील सागर में मछली पकड़ने के जाल डाल रहा था।

उद्देश्य: सुसमाचार का प्रचार करना और लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाने वाला (मनुष्यों का मछुआरा) बनना।

आज्ञापालन: उसने अपने जाल और नाव वहीं छोड़ दिए और उद्धारकर्ता के पीछे हो लिया।

पढ़ें: मत्ती 4:18-22

5. पौलुस

परिस्थिति: वह मसीहियों को गिरफ्तार करने और उन्हें प्रताड़ित करने के लिए दमिस्क जा रहा था।

उद्देश्य: अन्य-जातियों तक सुसमाचार पहुँचाना।

आज्ञापालन: स्वर्गीय ज्योति से अंधे हो जाने के बाद, उसने तुरंत समर्पण कर दिया और यीशु की आज्ञा मानी।

पढ़ें: प्रेरितों के काम 9:1-22; 2 तीमोथियुस 4:7-8

∞ ————— ∞



परमेश्वर की बुलाहट और जिन्होंने नहीं माना

योना

परिस्थिति: वह इस्राएल देश में एक जाने-माने नबी के तौर पर शांति से रह रहा था।

उद्देश्य: नीनवे के लोगों तक परमेश्वर का संदेश पहुँचाना—जो बुरे कामों में लगे थे—और उन्हें पश्चाताप के लिए बुलाना।

अनाज्ञाकारिता: परमेश्वर की आज्ञा मानने के बजाय, वह तरशीश जाने वाले जहाज़ पर चढ़ गया, (शहर जो विपरीत दिशा में था) और भाग गया।

पढ़ें: योना 1:1–3; 3:1–4

सिमशोन

परिस्थिति: वह एक नाज़िर के तौर पर पैदा हुआ था; जन्म से ही परमेश्वर को समर्पित और जीवन भर खास मंत्रों के तहत जीने के लिए अलग किया गया था।

उद्देश्य: परमेश्वर से मिली असाधारण ताकत के ज़रिए इस्राएलियों को पलिस्तिनों के ज़ुलम से आज़ाद कराना।

अनाज्ञाकारिता: उसने बार-बार परमेश्वर से की गई प्रतिज्ञाओं को तोड़ा और अपनी इच्छाओं और निजी सुख-सुविधाओं को चुना।

पढ़ें: न्यायियों 13:1–5; 16:21–31

राजा शाऊल

परिस्थिति: राजा के तौर पर अभियेक होने से पहले, वह अपने पिता के खोए हुए गधों को ढूँढ़ रहा था। **उद्देश्य:** इज़राइल के दुश्मनों, अमालेकियों को हराना और उनके पास जो कुछ भी था, उसे पूरी तरह नष्ट कर देना, जिसमें उनके जानवर भी शामिल थे।

अनाज्ञाकारिता: उसने अमालेकियों के राजा अगाग को ज़िंदा छोड़कर परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी। उसने सबसे अच्छी भेड़ों, भवेशियों और सामान को नष्ट करने के बजाय अपने पास रख लिया।

पढ़ें: 1 शमूएल 15:1–23; 31:1–6

धनी युवक

परिस्थिति: जब यीशु एक घाता पर निकल रहे थे, तो वह दौड़कर उनके पास आया, उनके सामने घुटने टेके और पूछा, "अनंत जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?"

उद्देश्य: अपनी संपत्ति गरीबों को देना, क्रूस उठाना और यीशु के पीछे चलना।

अनाज्ञाकारिता: क्योंकि उसके पास बहुत धन-दौलत थी, इसलिए वह यीशु की बातें सुनकर बहुत दुखी हुआ और उदास होकर चला गया।

पढ़ें: मत्ती 19:16–22; लूका 18:18–23

फेलिक्स

परिस्थिति: वह यहूदिया का राज्यपाल था, भ्रष्टाचार और अन्याय से घिरा हुआ व्यक्ति था, और पौलुस (जो एक कैदी था) के मामले की सुनवाई के लिए अधिकार के साथ बैठा था।

उद्देश्य: पौलुस द्वारा सुनाए गए सुसमाचार को सुनना, अपने बुरे कामों से मुड़ना, पश्चाताप करना और मसीह के ज़रिए मिलने वाला उद्धार पाना।

अनाज्ञाकारिता: जब पौलुस ने धार्मिकता, संयम और आने वाले न्याय के बारे में बात की, तो फेलिक्स डर गया और कहा, "अभी चले जाओ; जब मुझे सही समय मिलेगा तो मैं तुम्हें बुलाऊँगा।" ऐसा करके, उसने अपने उद्धार के बारे में फ़ैसला टाल दिया।

पढ़ें: प्रेरितों के काम 24:24–25

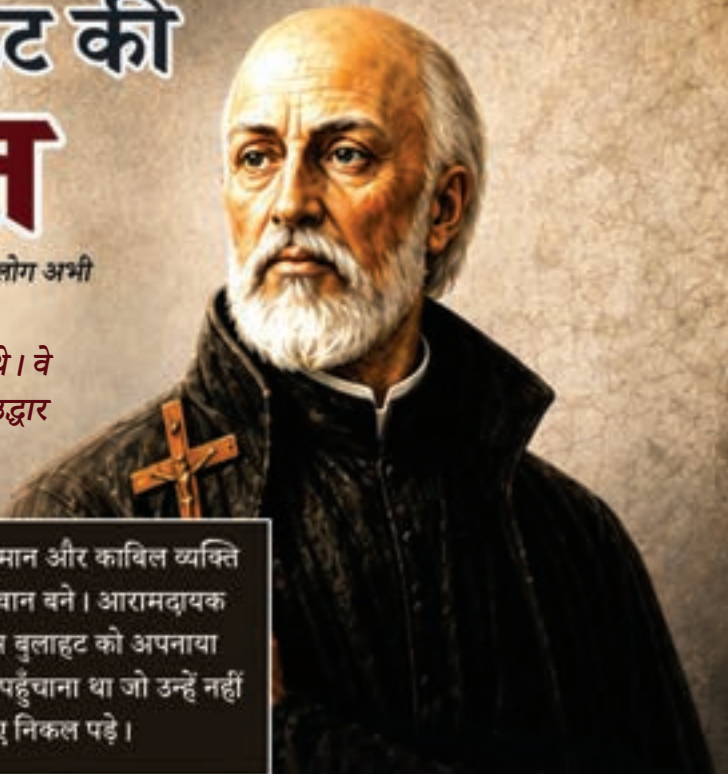


बुलाहट की कीमत

“हे परमेश्वर, मेरा हृदय कितना दुखी है कि लोग अभी भी तुझे नहीं जानते!”

ये शब्द जीन डी ब्रेबेफ के हृदय से निकले थे। वे एक मिशनरी थे जो लोगों तक मसीह का उद्धार पहुँचाने के लिए अपनी जान देने को भी तैयार थे।

1593 में फ्रांस के नॉर्मंडी में जन्मे जीन बहुत बुद्धिमान और काबिल व्यक्ति थे। वे 1617 में चर्च से जुड़े और 1622 में पासवान बने। आरामदायक ज़िंदगी चुनने के बजाय, उन्होंने परमेश्वर की उस बुलाहट को अपनाया जिसके तहत उन्हें मसीह का संदेश उन लोगों तक पहुँचाना था जो उन्हें नहीं जानते थे। 1625 में, वे कनाडा के लिए निकल पड़े।



यह सफ़र आसान नहीं था। उन्हें कड़ाके की ठंड, भूख, बीमारी, अकेलेपन और एक अनजान भाषा का सामना करना पड़ा। फिर भी, उन्होंने पीछे हटने से इनकार कर दिया। जीन ह्यूरोन लोगों के बीच रहे और उनकी भाषा और संस्कृति सीखी। उन्होंने उनकी भाषा में व्याकरण, शब्दकोश और क्रिसमस का भजन भी तैयार किया। उनके लिए बड़ी-बड़ी मुश्किलें उठाने की उनकी इच्छा के कारण, वे उन्हें प्रेम से “एकॉन” कहते थे, जिसका अर्थ है “वह जो भारी बोझ उठाता है।”

जब चेचक की महामारी फैली, तो बीमारी फैलाने का आरोप मिशनरियों पर लगाया गया। फिर भी, जीन ने बीमारों का साथ छोड़ने से इनकार कर दिया। महामारी के दौरान भी वे उनसे मिलते रहे और उनकी सेवा करते रहे; उन्होंने मरणासन्न लोगों को सांत्वना दी और बपतिस्मा दिया।

एक बार जब भयंकर सूखा पड़ा, तो उन्हें धमकी दी गई और मिशन की झोपड़ी के ऊपर लगे लाल क्रॉस को हटाने का आदेश दिया गया। जीन ने इनकार कर दिया। इसके बजाय, वे सच्चे परमेश्वर से प्रार्थना करने में लोगों के साथ शामिल हो गए। जैसे ही उन्होंने प्रार्थना की, जोरदार बारिश होने लगी। जीन ने हथियारों से लड़ाई नहीं लड़ी। उनकी लड़ाई प्रार्थना, धैर्य और प्रेम के ज़रिए लड़ी गई थी।

जैसे-जैसे साल बीतते गए, उन्होंने जंगलों, नदियों और बर्फ से ढके इलाकों की यात्रा की, कई गाँवों का दौरा किया और सुसमाचार के लिए केंद्र स्थापित किए। उनके साथ



जुड़ने वाले नए मिशनरियों को उन्होंने सरल लेकिन प्रभावशाली सलाह दी: “इन लोगों से प्रेम करो। शिकायत मत करो। उनके बीच रहना सीखो।”

बलिदान का दिन

16 मार्च, 1649 का दिन उनके सबसे बड़े बलिदान का दिन बन गया।

इरोक्विस योद्धाओं ने ह्यूरॉन गाँव पर हमला किया और जीन तथा उनके साथी मिशनरी गेब्रियल लालमंत को पकड़ लिया गया। मसीह को नकारने के लिए मजबूर करने की कोशिश में उन्हें बेरहमी से प्रताड़ित किया गया। उन पर उबलता हुआ पानी डाला गया और उनके गले में लाल-गर्म लोहे की छड़ें लटका दी गईं। फिर भी जीन ने अपना विश्वास नहीं छोड़ा। आखिरकार, उन्हें ज़िंदा जला दिया गया और वे शहीद हो गए। उनका असाधारण साहस इतना ज़बरदस्त था कि उनके दुश्मन भी हैरान रह गए। लेकिन उनकी कहानी यहीं खत्म नहीं हुई।

उनके बलिदान ने मिशनरियों की एक नई पीढ़ी को प्रेरित किया। ह्यूरॉन लोगों में से कई लोगों ने मसीही धर्म अपना लिया, जबकि उनकी भाषा और संस्कृति में किए गए उनके काम को याद किया जाता रहा। उनकी शहादत के बाद, कई युवा मिशनरियों ने कनाडा के जंगलों में सुसमाचार पहुँचाने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया।

1930 में, जीन डी ब्रेबेफ़ को आधिकारिक तौर पर संत का दर्जा दिया गया। जीन ने कभी यह सोचकर जीवन नहीं जिया कि “मुझे क्या मिलेगा?” बल्कि, उनके जीवन ने एक बहुत बड़े सवाल का जवाब दिया: “मैं मसीह के लिए और क्या दे सकता हूँ?”

हमारे लिए एक चुनौती

क्या हम कोई छोटी-छोटी मुश्किलें आने पर पीछे हट जाते हैं?

क्या अस्वीकृति का सामना करने पर हम सेवा करना छोड़ देते हैं?

क्या हम परमेश्वर के बुलाहट पर कहीं भी जाने से इसलिए हिचकिचाते हैं क्योंकि

वह आरामदायक नहीं होता?

जीन डी ब्रेबेफ़ का जीवन हमें मसीह के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की जाँच करने की चुनौती देता है।

“अपनी जान देने के लिए कहे जाने का इंतज़ार न करें; आज आपके पास जो कुछ भी है, उसे मसीह को समर्पित कर दें।”

— जीन डी ब्रेबेफ़

Youth Revival Meeting

In Maharashtra - Nagpur...

Day: **10 October 2026**
Saturday

Time: **9:00 AM – 5:00 PM**

₹100
entry fee

Place: Amaris Hall, St. Ursula Girl's High School,
Opposite V.C.A. Ground, Civil Lines, Nagpur,
Maharashtra - 440001

Contact: 99231 80390 | 90048 82470

Message & Prayer: **Bro. Sam Jebaraj**





मैं उनेसिफूरूस हूँ...

परिचय

आज की पीढ़ी में, परमेश्वर के कई सेवक अकेलेपन, विरोध, दुख और निराशा का सामना कर रहे हैं। कुछ लोग उनके साथ खड़े होने से डरते हैं, जबकि दूसरे केवल अपनी सुरक्षा और आराम की चिंता करते हैं।

लेकिन मेरा जीवन एक शक्तिशाली सच्चाई बताता है: परमेश्वर के थके हुए सेवकों का हौसला बढ़ाना, उनके साथ खड़ा होना और उनकी मदद करना, किसी बड़े मंच से उपदेश देने की तुलना में परमेश्वर की नज़र में कहीं अधिक मूल्यवान् सेवा हो सकती है। मेरी प्रार्थना है कि मेरी गवाही आपको परमेश्वर के एक वफादार सेवक के रूप में जीने के लिए प्रेरित करे।

मैं उनेसिफूरूस हूँ

बाइबल में मेरे बारे में केवल कुछ ही आयतें हैं। फिर भी परमेश्वर ने मेरे जीवन और सेवा को अपने वचन में सुरक्षित रखने का फैसला किया। लोग भूल सकते हैं, लेकिन परमेश्वर वफादार सेवा को कभी नहीं भूलते।

“उनेसिफूरूस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ।” — 2 तीमुथियुस 1:16

वह समय जिसमें मैं रहता था

मेरे जीवनकाल में, प्रेरित पौलुस को मसीह के लिए जेल में डाल दिया गया था। क्योंकि उनके साथ जुड़े रहना खतरनाक था, इसलिए बहुत से लोगों ने उन्हें छोड़ दिया। “एशिया प्रांत में सभी ने मुझे छोड़ दिया है” (2 तीमुथियुस 1:15)।

डर ने बहुतों के विश्वास को कमजोर कर दिया। लेकिन उस कठिन समय में, परमेश्वर ने मुझे सच्चा प्रेम और वफादारी दिखाने का मौका दिया।

मेरी सेवा

जब मैंने सुना कि पौलुस रोम में जेल में हैं, तो मैं बस घर पर नहीं बैठा रहा। मैं उनसे मिलने रोम गया। उन्हें ढूँढना आसान नहीं था, लेकिन मैंने हार नहीं मानी। पौलुस ने स्वयं मेरे बारे में गवाही दी: “जब वह रोम में थे, तो उन्होंने मुझे तब तक बहुत खोजा जब तक कि मैं उन्हें मिल नहीं गया” (2 तीमुथियुस 1:17)। परमेश्वर के सेवक को ढूँढना और उनकी मदद करना मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण सेवाओं में से एक बन गया।

मेरा चरित्र

1. मैंने अक्सर परमेश्वर के सेवक का हौसला बढ़ाया

जो व्यक्ति टूटा हुआ और निराश है, उसका हौसला बढ़ाना एक सामर्थी सेवा है। इन दिनों, परमेश्वर के थके हुए सेवकों को आलोचना से ज़्यादा हौसले की ज़रूरत होती है। पौलुस ने कहा: “उन्होंने अक्सर मुझे तरोताज़ा किया” (2 तीमुथियुस 1:16)।

2. मैं पौलुस की बेड़ियों से शर्मिंदा नहीं था

जब बहुत से लोगों ने पौलुस को छोड़ दिया, तो मैं उनके साथ खड़ा रहा। मैंने लोगों की राय से ज़्यादा परमेश्वर के प्रति वफादारी को अहमियत दी।

“उसे मेरी बेड़ियों से शर्म नहीं आई” (2 तीमुथियुस 1:16)।

3. मैंने लगन से सेवा की

सच्ची सेवा के लिए मेहनत, समर्पण और त्याग की ज़रूरत होती है। जब सफ़र मुश्किल था, तब भी मैंने पौलुस को ढूँढ़ना नहीं छोड़ा। “उसने मुझे ढूँढ़ने के लिए बहुत कोशिश की और आखिरकार मुझे ढूँढ़ ही लिया” (2 तीमुथियुस 1:17)।

4. मैंने वफ़ादारी से सेवा जारी रखी

मेरी सेवा रोम में खत्म नहीं हुई। मैंने इफिसुस में भी सेवा जारी रखी। लगातार और वफ़ादारी से की गई सेवा परमेश्वर की नज़र में बहुत कीमती है। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा: “तुम अच्छी तरह जानते हो कि उसने इफिसुस में मेरी कितनी मदद की” (2 तीमुथियुस 1:18)।

मेरे परिवार पर परमेश्वर की आशीष

परमेश्वर के प्रति किसी व्यक्ति की वफ़ादार सेवा उसके पूरे परिवार के लिए आशीष बन सकती है। परमेश्वर उन लोगों की मेहनत को नहीं भूलता जो उसे ढूँढ़ते हैं। पौलुस ने मेरे परिवार के लिए प्रार्थना की: “प्रभु उनेसिफुरुस के परिवार पर दया करे” (2 तीमुथियुस 1:16)।

मेरे जीवन से पाँच सबक

- परमेश्वर के सेवकों का हौसला बढ़ाना एक नेक सेवा है। — 2 तीमुथियुस 1:16
- जो लोग मुश्किल समय में दूसरों का साथ देते हैं, वे ही सच्चे मित्र होते हैं। — 2 तीमुथियुस 1:16–17
- सेवा के लिए त्याग की भावना ज़रूरी है। — 2 तीमुथियुस 1:17
- परमेश्वर सेवा के छोटे-से-छोटे काम को भी कभी नहीं भूलता। — इब्रानियों 6:10
- वफ़ादारी और लगातार की गई सेवा का फल हमेशा बना रहता है। — 2 तीमुथियुस 1:18

Gen Z और Gen Alpha के लिए मेरा संदेश

आज, बहुत से लोग मंच तो चाहते हैं, लेकिन सेवा नहीं करना चाहते।

वे तारीफ़ चाहते हैं, लेकिन त्याग नहीं करना चाहते। ऐसे मत बनो!

जब परमेश्वर के सेवक थक जाएँ, तो उनका हौसला बढ़ाओ। उनके लिए प्रार्थना करो। उनसे मिलने जाओ। उनके साथ खड़े रहो और उनकी मदद करो। जब वे दुख से गुज़र रहे हों, तो उन्हें छोड़कर मत जाओ। बाइबल कहती है: “एक-दूसरे का बोझ उठाओ, और इस तरह तुम मसीह के नियम को पूरा करोगे।” — गलातियों 6:2

जो सेवा दूसरों को मज़बूत और प्रोत्साहित करती है, वह परमेश्वर के राज्य की सबसे महान सेवाओं में से एक है।

निष्कर्ष

बाइबल में मेरा नाम बस कुछ ही बार आया है। फिर भी, पौलुस मेरी वफ़ादार सेवा को नहीं भूले। उन्होंने प्रार्थना की:

“प्रभु करे कि उस दिन उसे प्रभु की दया मिले।” — 2 तीमुथियुस 1:18

मेरे जीवन का संदेश सरल है:

- ◀ वफ़ादार रहो!
- ◀ जो थक गए हैं, उनका हौसला बढ़ाओ!
- ◀ परमेश्वर के सेवकों के साथ खड़े रहो और उनका साथ दो!
- ◀ भले ही कोई तुम्हें न देखे, परमेश्वर तुम्हें देखता है!

“परमेश्वर अन्याय नहीं करता; वह तुम्हारे काम और उस प्रेम को नहीं भूलेगा जो तुमने उसके लोगों की मदद करके और लगातार मदद करते हुए उसे दिखाया है।” ...

बाइबल की खोज-बीन



पुराने नियम के नबियों को मुख्य तौर पर 5 बड़े नबियों और 12 छोटे नबियों में बांटा जा सकता है। इस महीने से, हम पहली और सबसे बड़ी भविष्यवाणी की पुस्तक—यशायाह—के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और मुख्य घटनाओं को आसान और समझने लायक तरीके से जानेंगे।

आइए... परमेश्वर के वचन को गहराई से जानें और मिलकर इसे समझें!

यशायाह की किताब को चार मुख्य हिस्सों में बांटा जा सकता है:

- अध्याय 1-12 – यरूशलेम के लिए न्याय और उम्मीद
- अध्याय 13-27 – सभी देशों के लिए न्याय और उम्मीद
- अध्याय 28-39 – यरूशलेम का उत्थान और पतन
- अध्याय 40-66 – एक नई उम्मीद!
- अध्याय 1-12 – यरूशलेम के लिए न्याय और उम्मीद



(अध्याय 1-5)

यहूदा के लोग परमेश्वर से दूर हो गए थे। वे मूर्ति-पूजा में लगे थे, दिखावे की ज़िंदगी जी रहे थे और खोखली, झूठी पूजा कर रहे थे। इस वजह से, परमेश्वर ने यशायाह के ज़रिए उन्हें चेतावनी दी: “न्याय आ रहा है!”

फिर भी, उसी समय में परमेश्वर ने उन लोगों को क्षमा करने और बहाल करने का वादा किया जो वास्तव में पश्चाताप करते हैं।

(अध्याय 6)

यशायाह एक दर्शन में पवित्र परमेश्वर को उनके सिंहासन पर बैठे हुए देखते हैं। यह अनुभव उनकी ज़िंदगी को पूरी तरह बदल देता है। इस अनुभव के ज़रिए, यशायाह को परमेश्वर का नबी बनने के लिए बुलाया जाता है।

यशायाह आने वाले न्याय और उसके बाद मिलने वाली आशा, दोनों की घोषणा करते हैं। वे इम्वानुएल (अध्याय 7) और दाऊद के वंश से आने वाले धर्मी राजा (अध्याय 11) के आने की भविष्यवाणी करते हैं।

हालाँकि इस्राएल और यहूदा को कड़े न्याय का सामना करना पड़ा—पहले अशूर और बाद में बेबीलोन के हाथों—फिर भी परमेश्वर ने वफादार लोगों के एक समूह को बचाए रखा—एक ऐसा बचा हुआ समूह जो वफादारी से उनका अनुसरण करता रहा।

आखिर में, यशायाह उस दिन की ओर देखते हैं जब परमेश्वर अपना हमेशा का राज्य स्थापित करेंगे, और उनके लोग उस उद्धार में खुशी मनाएंगे जो वे देंगे (अध्याय 9-12)।

अध्याय 13-27 – सभी देशों के लिए न्याय और आशा

यह हिस्सा बताता है कि परमेश्वर न सिर्फ़ यहूदा के न्यायकर्ता हैं, बल्कि दुनिया के सभी देशों के न्यायकर्ता भी हैं।

कोई भी राज्य और कोई भी महान ताकत हमेशा के लिए नहीं रहती। आज दुनिया पर राज करने वाली ताकतें कल खत्म हो सकती हैं। लेकिन सिर्फ़ परमेश्वर का राज्य ही हमेशा कायम रहेगा। इस हिस्से के आखिर में, यशायाह एक सुन्दर दर्शन देखता है—नया यरूशलेम! हर देश, जाति और भाषा के लोग एक साथ आएंगे और मिलकर प्रभु की उपासना करेंगे।

अध्याय 28-39 – यरूशलेम का उत्थान और पतन

(अध्याय 28-35)

यहूदा ने परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय दूसरे देशों के साथ राजनीतिक गठबंधन करना चुना।

(अध्याय 36-38)

जब राजा हिजकियाह ने नम्रता दिखाई और परमेश्वर पर भरोसा किया, तो प्रभु ने चमत्कारिक रूप से उसे अशूरियों से बचाया।

(अध्याय 39)

लेकिन, इस जीत के बाद हिजकियाह के मन में घमंड आ गया। जब बाबुल से कुछ लोग इस्राएल के बारे में जानने आए, तो राजा ने उन्हें अपने महल में जमा किए गए सारे खजाने दिखाए। तब यशायाह ने भविष्यवाणी की, “वही बाबुल जो आज तुम्हारे पास एक दोस्त बनकर आया है, एक दिन तुम्हें और इस शहर को बर्बाद कर देगा।”

लगभग 100 साल बाद, यह भविष्यवाणी सच हुई!

(2 राजा 24-25)

अध्याय 40-66 – एक नई आशा!

भले ही यरूशलेम बर्बाद हो गया था, लेकिन कहानी वहीं खत्म नहीं हुई।

(अध्याय 40)

कैद का समय खत्म हो जाएगा, और एक नई उम्मीद जागेगी।

(अध्याय 41-42)

परमेश्वर साइरस नाम के एक राजा को खड़ा करेगा, जो उसके लोगों को कैद से आज़ाद करेगा।

(अध्याय 48)

क्योंकि इस्राएल अभी भी आज्ञा न मानने की हालत में जी रहा था, वे ऐसे मोड़ पर पहुँच गए थे जहाँ परमेश्वर उन्हें अपने सेवकों के तौर पर इस्तेमाल नहीं कर सकता था जैसा उसने सोचा था। फिर भी, परमेश्वर ने उन्हें नहीं छोड़ा। वह अपनी योजना पर काम करता रहा, उन्हें फिर से आशीष देता रहा और उनके लिए अपने मकसद को आगे बढ़ाता रहा।

(अध्याय 49-55)

यशायाह “प्रभु के सेवक” के बारे में बताता है। वह हमारे पापों के कारण दुख उठाएगा, हमारी जगह मरेगा, और हमारे लिए परमेश्वर के साथ फिर से शांति और मेल-मिलाप से जीने का रास्ता खोलेगा। यह भविष्यवाणी यीशु मसीह में पूरी तरह सच साबित हुई।

(अध्याय 56-66)

यशायाह की किताब उम्मीद के एक अद्भुत संदेश के साथ खत्म होती है।

परमेश्वर एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी बनाएगा। वहाँ कोई अन्याय नहीं होगा। वहाँ हमेशा धार्मिकता, शांति और आनंद का राज होगा!

इसे याद रखें!

यशायाह की भविष्यवाणी से हमें क्या सीखने को मिलता है?

परमेश्वर पाप का न्याय करते हैं।

जो लोग पश्चाताप करते हैं, उन्हें परमेश्वर उद्धार और आशा देते हैं।

और आखिर में, यीशु मसीह के ज़रिए परमेश्वर अपना हमेशा रहने वाला राज्य स्थापित करेंगे।

आइए, हम प्रार्थना करें

अक्टूबर 2026

युवाओं में HIV

HIV के साथ जी रहे लोगों की संख्या के मामले में भारत दुनिया में दूसरे स्थान पर है। आंकड़ों के अनुसार, भारत में महाराष्ट्र में सबसे ज़्यादा 3.99 लाख लोग इससे प्रभावित हैं, इसके बाद आंध्र प्रदेश में 3.23 लाख और कर्नाटक में 2.91 लाख लोग हैं।

कर्नाटक में, 18-35 साल के लोगों में HIV रजिस्ट्रेशन 2023-24 में 44,581 से बढ़कर 2025-26 में 66,606 हो गया, जो लगभग 49% की बढ़ोतरी है। यह भी बताया गया है कि लगभग 56,000 लोग HIV के साथ जी रहे हैं, लेकिन उन्हें पता ही नहीं है कि वे संक्रमित हैं।

आइए हम उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो अस्वस्थ यौन संबंधों में फँसे हैं ताकि उन्हें आज़ादी मिल सके, और नशीली दवाओं के इस्तेमाल और सुई या सिरिंज साझा करने से HIV के प्रसार को रोका जा सके।

अल नीनो और संक्रामक बीमारियों का खतरा

मौसम विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस बात की लगभग 90% - 97% संभावना है कि अल नीनो की स्थिति इस साल के अंत तक और 2027 की वसंत ऋतु की शुरुआत तक बनी रह सकती है।

चूंकि अल नीनो तापमान बढ़ने का कारण बन सकता है, इसलिए मच्छरों और अन्य कीड़ों की आबादी बढ़ सकती है, जिससे डेंगू, ज़िका और चिकनगुनिया जैसी वायरल बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। अल नीनो के असर पर हुई एक चर्चा में, विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक ने यह भी चेतावनी दी कि जलवायु परिवर्तन गंभीर वायरल संक्रमणों का कारण बन सकता है, जिनसे COVID-19 से भी ज़्यादा खतरा हो सकता है।

आइए हम प्रार्थना करें कि जलवायु परिवर्तन को नियंत्रण में लाया जाए और संक्रामक बीमारियों के प्रसार को रोका जा सके।

भारत में मधुमेह (डायबिटीज)

जैसे-जैसे दुनिया भर में मधुमेह से प्रभावित लोगों की संख्या बढ़ रही है, अध्ययनों से पता चलता है कि बच्चे और वयस्क दोनों ही तेज़ी से इससे प्रभावित हो रहे हैं। इंडियन काउंसिल ऑफ़ मेडिकल रिसर्च (ICMR) के एक अध्ययन के अनुसार, भारत में लगभग 10.1 करोड़ लोग मधुमेह के साथ जी रहे हैं, जबकि लगभग 13.6 करोड़ लोग प्री-डायबिटिक अवस्था में हैं। तमिलनाडु में, लगभग 1 करोड़ लोग मधुमेह के साथ जी रहे हैं, जबकि 80 लाख लोग



प्री-डायबिटिक अवस्था में हैं। खान-पान की गलत आदतों से न केवल मोटापा बढ़ सकता है, बल्कि बच्चों में भी डायबिटीज का खतरा बढ़ सकता है। समय से पहले जन्म, जन्म के समय कम वज़न और आनुवंशिक कारणों से भी कम उम्र में डायबिटीज होने का खतरा बढ़ सकता है। आइए हम अपने देश के लोगों की सेहत और भलाई के लिए प्रार्थना करें, खासकर उन लोगों के लिए जो डायबिटीज से बुरी तरह प्रभावित हैं।

भावनात्मक सहारे के लिए युवा AI चैटबॉट्स का सहारा ले रहे हैं

हाल की स्टडीज़ से पता चलता है कि 12-21 साल के 19.2% युवाओं और 13-17 साल के 64% युवाओं—यानी लगभग 82 लाख युवाओं—ने तनाव, चिंता, गुस्से या उदासी के समय ChatGPT, Gemini, Meta AI और Character.AI जैसे AI चैटबॉट्स से सलाह ली है। यह आंकड़ा 2024 में 13.1% से बढ़कर 2025-26 की स्टडी में 19.2% हो गया है। लगभग 28% लोगों ने बताया कि वे रोज़ AI चैटबॉट्स का इस्तेमाल करते हैं।

मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट्स चेतावनी देते हैं कि AI चैटबॉट्स डॉक्टर या पेशेवर सलाहकार का विकल्प नहीं हैं।

आइए प्रार्थना करें कि तनाव और जीवन की चुनौतियों के समय युवा सिर्फ़ AI पर निर्भर न रहें, बल्कि समझदारी भरी सलाह और सहारे के लिए परमेश्वर की ओर देखें और भरोसेमंद लोगों से मदद लें।

भारत के बंदरगाह और तटीय सुरक्षा

भारत में 13 बड़े और 200 से ज़्यादा छोटे बंदरगाह हैं। तमिलनाडु में 24 चालू बंदरगाह हैं, जिनमें चेन्नई, थूथुकुडी और एन्नोर के तीन बड़े बंदरगाह शामिल हैं।

भारत का लगभग 95% विदेशी व्यापार (मात्रा के हिसाब से) और 65% (मूल्य के हिसाब से) समुद्र के रास्ते होता है।

आइए प्रार्थना करें कि गैर-कानूनी तस्करी, ड्रग्स की तस्करी और दूसरी हानिकारक गतिविधियों को रोका जाए, और भारत के तटीय इलाकों पर परमेश्वर का अधिकार और सुरक्षा बनी रहे।

भारत की सीमाओं पर सुरक्षा

आइए प्रार्थना करें कि भारत की सीमाओं पर होने वाले आतंकवाद, घुसपैठ, ड्रग्स की तस्करी, हथियारों की तस्करी और दूसरी गैर-कानूनी गतिविधियों को पूरी तरह रोका जाए।

आइए यह भी प्रार्थना करें कि परमेश्वर सीमा सुरक्षा बलों, सेना के जवानों और दूसरे सुरक्षा अधिकारियों को समझदारी, साहस, ताकत और सुरक्षा प्रदान करें ताकि वे अपनी ज़िम्मेदारियों को ईमानदारी से निभा सकें। परमेश्वर भारत की सीमाओं के हर हिस्से की रक्षा करें।

प्राकृतिक आपदाएँ

साल 2026 के शुरुआती सात महीनों में, कई तरह की प्राकृतिक आपदाओं—जैसे भीषण गर्मी, तूफ़ान, भारी बारिश, बिजली गिरना, अचानक बाढ़ आना, भूकंप, ज़मीन खिसकना और जंगलों में आग लगना—के कारण तबाही हुई है और जान-माल का नुकसान हुआ है।

आइए हम प्रार्थना करें कि ऐसी आपदाओं और उनके विनाशकारी नतीजों को रोका जा सके और परमेश्वर हमारे देश और यहाँ के लोगों की रक्षा करें।

आइए हम यह भी प्रार्थना करें कि प्रभावित परिवारों को राहत और ज़रूरी मदद मिले, और बचाव व राहत कार्यों में लगे सरकारी अधिकारियों, आपदा-प्रबंधन टीमों, पुलिसकर्मियों, अग्निशमन कर्मियों और स्वयंसेवकों को प्रभावी और बहादुरी से काम करने के लिए परमेश्वर से समझदारी और सामर्थ मिले।



समाचार



भारत और पड़ोसी देशों के लिए बड़ा खतरा: क्या नेपाल की आपदा के लिए चीन ज़िम्मेदार है? अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों की चेतावनी

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह चिंता बढ़ रही है कि भौगोलिक रूप से संवेदनशील हिमालयी क्षेत्र में चीन की विशाल पनबिजली परियोजनाएं दुनिया भर के देशों के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकती हैं। यह चिंता नेपाल-चीन सीमा पर आई विनाशकारी बाढ़ के बाद और बढ़ गई है।

चीन अभी तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर दुनिया का सबसे बड़ा पनबिजली बांध बना रहा है, जिसे 'मेडोग' परियोजना के नाम से जाना जाता है। इसकी अनुमानित लागत 167.8 अरब अमेरिकी डॉलर है। यह नदी चीन की सीमा से सटे भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश से होकर बहती है। इस बांध का काम 2030 तक पूरा होने की उम्मीद है और इससे सालाना 300 अरब यूनिट बिजली पैदा होने की संभावना है—जो मशहूर 'घ्री गॉर्जस बांध' की क्षमता से तीन गुना ज्यादा है।



लाइन ऑफ़ एक्चुअल कंट्रोल (LAC) से सिर्फ 30 किलोमीटर दूर स्थित इस बांध ने अरुणाचल प्रदेश के लिए संभावित खतरे को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा कर दी हैं। अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने सार्वजनिक रूप से चेतावनी दी है कि यह परियोजना "फटने का इंतज़ार कर रहे पानी के बम" (water bomb) में बदल सकती है। यह भी कहा जा रहा है कि ज़मीन, पानी, हवा, अंतरिक्ष, साइबर और इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम युद्ध के बाद, चीन युद्ध के सातवें क्षेत्र के तौर पर "पानी" को भी शामिल कर सकता है।

सैन्य विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2030 के बाद, चीन और पाकिस्तान मिलकर भारत के खिलाफ़ एक साथ दो मोर्चों पर युद्ध छेड़ सकते हैं। ऐसी स्थिति में चिंता यह है कि चीन अचानक मेडोग बांध से पानी छोड़ सकता है, जिससे 48 से 72 घंटों के भीतर अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्से डूब सकते हैं, जबकि उसी समय पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर सीमा पर सीधा हमला कर सकता है। आधुनिक युद्ध के सात क्षेत्रों में से, भारत को तीन अहम क्षेत्रों—वायु शक्ति, अंतरिक्ष और जल-संसाधन युद्ध—में बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस बीच, चीन भारत के पड़ोसी देशों बांग्लादेश और पाकिस्तान के साथ अपने सैन्य संबंध मज़बूत कर रहा है और साथ ही समुद्री और ज़मीनी सीमाओं के ज़रिए भारत को घेरने की रणनीतियाँ भी बना रहा है।

तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन जिस मेडोग पनबिजली बांध को बनाने की योजना बना रहा है, वह कथित तौर पर भूकंप की दृष्टि से सक्रिय और भूगर्भीय रूप से क्षतिग्रस्त क्षेत्र में स्थित है। इसके अलावा, इन परियोजनाओं से जुड़े साफ़-सुथरे हाइड्रोलॉजिकल डेटा को शेर करने से चीन के इनकार ने भारत और बांग्लादेश जैसे निचले इलाकों वाले देशों के लिए पानी के मैनेजमेंट से जुड़ी गंभीर चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं।

यह चिंता भी बढ़ती जा रही है कि चीन पानी का इस्तेमाल हथियार के तौर पर कर सकता है; वह अपनी मर्ज़ी से कभी भी कृत्रिम सूखा पैदा कर सकता है या अचानक बाढ़ ला सकता है जिससे बड़े पैमाने पर तबाही हो सकती है।